सुधा ओम ढींगरा

साहिबान! बेकद्रदान

डुग डुग डुग. . .डुगडुगी की आवाज नक्कारखाने में तूती-सी उभरती है। सब अपने-अपने नक्कारखाने को चमकाने में व्यस्त हैं। कानों में इयर प्लग ठुसे हैं। डुग डुग की ध्वनि किसी पीड़िता-सी उपेक्षित है। डुग डुग ध्वनियां डगमगा रही हैं। इन ध्वनियों का बाजार में कोई खरीददार जो नहीं है। कान सुन सकते हैं पर उन्होंने यह ध्वनियां सुननी बंद कर दी हैं। आवाजें उनके कानों तक पहुंचती नहीं. . .पूरे विश्व में आवाज ग्रहण लगा हुआ है। अनसुने का वायरस व्याप्त हो गया है। कहीं अश्वेतों की सिसकियां, कहीं रेप पीड़िता की कराहें, कहीं अम्लघात से तड़पती रूहों की पीड़ा इस वायरस से ग्रस्त हो गयी है। देहों की नीलामी पर तो पूरे विश्व ने युगों पहले गांधारी की आंखों से उतरी पट्टी जो बांधी, वह आज तक बंधी हुई है। समरथ को नहीं दोष गोंसाई! नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे एक-सा हाल है।

मदारी ने डुगडुगी की आवाज के साथ स्वयं की आवाज मिलाई. . .साहिबान, कद्रदान मैं जानता हूं यह समय मजमों का समय नहीं। अपनी सुरक्षा और दूरी का है। मैं यह भी जानता हूं कि आज मुझे एक रुपया नहीं मिलेगा। लोगों के पास नौकरियां नहीं, धंधे मंदे हैं। साहब हम गरीबों की तो भूख पेट में ही मर चुकी है। आज कल बहुत ही कम लगती है और जितनी लगती है, उसका जुगाड़ मैंने जुटा लिया है। घर बैठे मैंने ऑन लाइन ढाबा खोला जो रोज नए-नए व्यंजनों की रेस्पी बताता है। पूरी दुनिया में अपने-अपने घरों में बैठे लोगों को मेरा ढाबा, उसके सामिश और निरामिश भोजन की रेस्पी बेहद पसंद आ रही हैं और चाहने वालों ने ही मेरे चैनल की रेटिंग भी बढ़ा दी है। रेटिंग बढ़ने से विज्ञापन मिलने लगें, जिससे आमदन होने लगी और मेरा तथा मेरे जमूरे का पेट भरने लगा।

कुछ लोग थोड़ी-थोड़ी दूरी छोड़ कर खड़े हो गए हैं और उन्होंने मास्क भी पहने हुए हैं पर कुछ तमाशबीन यूं ही तमाशा देखने खड़े हो गए। जिनका काम बेगानी शादी में अब्दुला दीवाना जैसा होता है. . . एवई बात बढ़ाना। ऐसे लोग हों चाहे कुछ भी नहीं, पर होते बहुत कुछ हैं। ये भीड़ बन उपभोक्ता की वस्तु बन जाते हैं जिनका हर कोई अपने स्वहितार्थ इधर-उधर ढकेल सकता है। ये वेल्ले होते हैं, निठल्ले होते हैं, समय काटने कुछ भी काट सकते हैं। बस मेहनताना' मिना चाहिए। मेहनताना मिलते ही दीन, ईमान, जात, धर्म सब बदल जाता है और बन जाते हैं तमाशबीन।

तमाशबीनों में से एक बोला- अबे यह कौन-सी भाषा बोल रहा है? मिश-मिश कर रहा है। बातों से तो पढ़ा-लिखा नहीं लगता!

-साहिबान यह भाषा हम गरीबों की भाषा है, इसे हिन्दी कहते हैं। आप पढ़े-लिखों की भाषा में इन्हें वेजिटेरियन और नॉन वेजिटेरियन कहते हैं। वैसे मैं पहले भी बहुत से लोगों को बता चुका हूं साहब मैं पढ़ा-लिखा हूं, कम्प्यूटर में डिप्लोमा किया हुआ है। जमूरी खानदानी कला को जिन्दा रखना चाहता हूं, इसलिए इसे छोड़ नहीं रहा।'

-तो तभी ऑनलाइन ढाबा खोल लिया। कोने में खड़े उसी तमाशबीनी समूह से एक बोला।

-जी साहब, अपने ज्ञान का सही उपयोग किया।

-यह फिर क्या बोला बे तू?

-यही साहब कि आपने अपनी नॉलेज को सही तरीके से यूज किया है।

-यह है पढ़े-लिखों की भाषा।' उस तमाशबीन ने हंसते हुए कहा।

वहां खड़ी कुछ सभ्य भीड़ भी उनकी ओर देखा कर हंस पड़ी।

-चल तमाशा दिखा बे! हम कब से इंतजार कर रहे हैं। तेरा जमूरा तो चुपचाप बैठा है। कुछ बोल ही नहीं रहा।' अब दूसरा सभ्य बोला।

-साहब आज मैं तमाशा नहीं दिखा सकता, मेरा जमूरा घर बैठे-बैठे थोड़ा डिप्रेशन में आ गया है, सोचा मजमें के बहाने इसे बाहर ले जाऊं। आप सब भी घरों में बैठे -बैठे तंग आ गए होंगे, बस इकट्ठे हो कर दो चार बातें करेंगे। सबका मन बहल जाएगा और डिप्रेशन दूर हो जाएगा।'

-रस्साले, जानता भी है डिप्रेशन होता क्या है?

-क्यों साहब, क्या यह सिर्फ अमीरों की बीमारी है? गरीबों को नहीं होती। अब करोना को ही देख लें उसने कोई भेदभाव किया है। सबको लपेट रहा है। पूरी दुनिया इसकी शिकार है। करोना ने अमीर-गरीब, गोरा-काला, जात-पांत किसी को नहीं बख्शा। फर्क बस इतना है अमीर लोग डिप्रेशन का इलाज करवा सकता है, गरीब फांसी का फन्दा लगाता है।'

प्रवासी मन की महत्वपूर्ण कथाकार और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सुधा ओम ढींगरा द्वारा संपादित शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो महत्वपूर्ण चर्चित कृतियां

'अम्लघात'

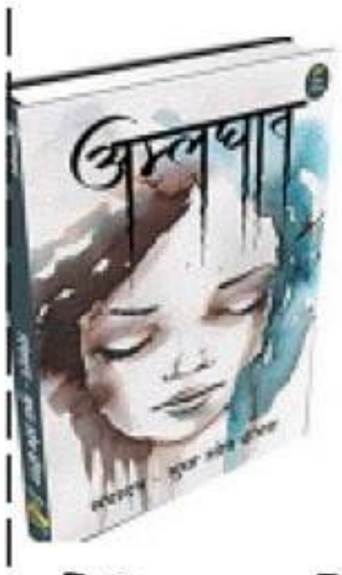

'वैश्विक प्रेम कहानियां'

जमूरा उठा और उसने डुगडुगी बजाई।

–साहिबान कद्रदान, जब फसलें उजड़ जाती हैं। बच्चे भूख से बिलबिलाते हैं। मां की छाती का दूध सूख जाता है, गोदी का बच्चा भूख से तड़प कर मर जाता है तो किसान फांसी लगाता है, साहब वह अवसाद में होता है।

जमूरा डुगडुगी बजाता गोल–गोल चक्कर लगाता नाचता है।

–साहब पहले पहल तो यह घर बैठा सोशल मिडिया पर लाइव प्रोग्राम देता बहुत बिजी था। पर सारा दिन लाइव प्रोग्राम देते और दूसरों के देखते–देखते, आभासी दुनिया की उठक–पटक में उलझता डिप्रेशन में आ गया जनाब। इसे वहां से निकाल कर बाहर की दुनिया में लाया हूं, रियल वर्ड में, चाहे दूर से ही सही, आपस में मिलने–जुलने और सच्चाई का सामना करने के लिए।'

वहां खड़े कुछ लोगों ने तालियां बजाईं और कुछ लोग नाक–भौं सिकोड़ते वहां से जाने को हुए।

–साहिबान, जिंदगी सिर्फ तमाशा नहीं, खेल नहीं। जिंदगी सुचवाती भी है। देखिये, सोचिए. . .करोना ने क्या सबक सिखाया है? एकल परिवार तो पहले ही बन चुके थे, पिछले कुछ वर्षों से देश भी एकल हो रहे थे। करोना ने इंसान को सीखा दिया, ऐ मानव तू अकेला आया है, और तुझे अकेले ही जाना है। यह दर्शन सुना था अब देख भी रहे हैं। चार कंधे भी नसीब नहीं हो रहे तो फिर झगड़े काहे के लिए। लोग बचेंगे तो परिवार बचेंगे, परिवार बचेंगे तो देश बचेगा। साहिबान कद्रदान, मास्क पहनिए, दूरी बनाए रखें और जहां तक हो सकता है, घरों में रहें और सुरक्षित रहें। अब तो हमें ऐसे ही जीना पड़ेगा।

–साला हमे ज्ञान देता है. . .अपने को डॉक्टर समझता है. . .दो कौड़ी का।

जमूरा कपड़े पहन आया और डुगडुगी मदारी के हाथ में दे दी। मदारी उसे बजाने लगा और वह नाचने लगा। लोग बिना ताली बजाए वहां से हटने लगे।

फैली चादर पर खोटा सिक्का भी नहीं पड़ा था। मदारी ने कहा– जमूरे! खाली हाथ आया था. . .खाली हाथ चल।'

उसके पास कुछ समेटने को नहीं था पर उसने अभासित कुछ समेटा।

अजय कुमार शर्मा

लघु व्यंग्य

किसका सूरज

शाम का समय था जगह थी कसूर . . .भारत और पाकिस्तान का बॉर्डर। वह छोटा बच्चा भी अपने फिल्मकार पिता के साथ आया था जो कि वहां बेहद सरगर्मी भरी झंडा बदलने की प्रक्रिया को शूट करने आए थे। एक सैनिक अधिकारी इस प्रक्रिया में उसकी सहायता कर रहा था। कैमरा उस सफेद रेखा के पास ही रखा था जो दोनों देशों की विभाजक रेखा थी। छोटा बच्चा बार–बार उस सफेद रेखा की दूसरी तरफ जाना चाहता था। पिता और अधिकारी उसे हर बार रोक रहे थे। परेशान होकर बच्चे ने पूछ ही लिया. . .पापा मैं लाइन के उस पार क्यों नहीं जा सकता? पापा कुछ कहते इससे पहले ही वहां खड़े सैनिक ने कहा कि वह हमारे दुश्मनों की जमीन है। अब बच्चे का सवाल था पापा यह दुश्मन की जमीन क्या होती है? पिता बात संभालते हुए बोला. . .बेटा इस लाइन के आगे हमारा देश नहीं है। उनसे हमारी लड़ाई चल रही है।

तभी बच्चे की नजर सूरज पर पड़ी जो लाइन पार डूबने को तैयार था। . . .तब पापा हमारा सूरज उनके देश में जाकर क्यों छुप रहा है. . .? अब डूबते सूरज का अंधेरा पिता और उस अधिकारी के चेहरे पर ज्यादा गहरा गया था।

चादर

बहुत सुंदर चादर थी वह. . .रंग बिरंगी. . .जिसके फूल उसकी मां ने हाथ से काड़े थे। एक तरह से मां की अंतिम निशानी। कल उसके भाई और भाभी घर आने वाले थे। उसने चादर निकालकर पलंग पर बिछा दी, यह सोचकर भाई भी मां की निशानी देख खुश होगा। अचानक उसकी सास आई और वह चादर उठाकर बोली. . .बहू कल मझली को कुछ लोग देखने आ रहे हैं कोई और चादर धुली नहीं है यह बिछाने के काम आ जाएगी।

आज उसके पिता आने वाले थे उसने फिर वही चादर बिछाई. . .अचानक छोटी ननद आई और उसे ले गई. . .भाभी पिकनिक के लिए इससे शानदार चादर कहां मिलेगी।

आज फिर उसने वही चादर निकाल कर बाहर रखी थी। कल सुबह उसकी छोटी बहन आ रही थी सोचा उसे दे दूंगी। काम निपटा कर जब सोने आई तो देखा पतिदेव पलंग पर वही चादर बिछा कर लेटे थे। देखते ही बाहों में भरकर बोले– आज कई दिनों बाद इस चादर को देखकर मूड़ बना है. . .उसे लगा पलंग पर मानो एक साथ दो चादर बिछी हुई हैं. . .

खालें

इंसान लंबे समय से जानवरों की खाल को कपड़ों की तरह लपेटता, बिछाता या ओड़ता आ रहा था. . .लेकिन अचानक जाने उसे क्या खब्त सवार हुई कि वह जानवरों की खालों में ही रहने लगा. . . किसी ने भेड़िए की तो किसी ने चूहे की . . .किसी ने शेर की तो किसी ने गीदड़ की। और तो और उन्होंने सांप और गिरगिट तक की खालों को नहीं छोड़ा. . .अब जानवरों को सामने अपने अस्तित्व का संकट का था। जंगल में एक सभा बुलाई गई और सबने तय किया कि अब हम इंसान की खाल पहन कर रहेंगे। अगले दिन जंगल में ताक लगाकर 20–25 इंसान पकड़े गए. . .और शुरू हुआ उनकी खाल खींचने का काम. . .लेकिन यह क्या? उनकी खालें इंसान के शरीर में ऐसे जब्ज हो गई थीं कि जानवर होते हुए भी वे उन्हें उनके शरीर से अलग नहीं कर पाए. . .डरे सहमे से जानवर अब जंगल में और अंदर लौट गए हैं।

'साहित्य अकादेमी', रवींन्द्र भवन 35
फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001